श्री जैन साहित्य अकादमी ट्रस्ट,मुंबई

जैन तीर्थो की भव्य गाथाए व्याखयान श्रेणी

व्याख्यान-२२

आंध्र-कर्नाटक के प्राचीन जैनतीर्थ इतिहासके परिप्रेक्ष्य में-२

व्याख्याता- श्री ऋषभभाई भंडारी

दिनांक: १३/०५/२०२३

दानवुलपाडू आंध्र प्रदेश के कडप्पा जिले में आता है| यह राष्ट्रकूट शासन एरा का टेम्पल है| भगवान महावीर विद्यमान थे तब भारत की स्पेशल नॉर्थन पार्ट ऑफ इंडिया में गणतंत्र व्यवस्था थी और मोनारकी दोनों प्रकार की व्यवस्था थी| मौर्य युग आते आते यह जो गणतंत्र की व्यवस्था थी| लगभग लगभग टूट गई और उन सब का विलय हो गया| मोरिया युग से लेकर अंग्रेजों के जमाने तक अंग्रेज अपने को मोनार्की नहीं कहते थे लेकिन वह एक मोनार्की सिस्टम ही था| भारत में 2200 साल तक यह मोनार्की राजव्यवस्था चली। इसके रीमेंस हमको राष्ट्रकूटा से मिलते हैं यह एक बहुत ही इंपॉर्टेंट है जैन दर्शन में| जैन सप्रदायो की अलग अलग विद्यमानता इस एरामें रही| राष्ट्रकूट एरा के बारेमे एक विद्वान थे उन्होंने संशोधन किया था| उनका लास्ट जो वर्क था वह इन्स्क्रिप्शन के बारे में फर्स्ट मिनेनिय्म के मतलब हजार सालो के जितने कनाडा इन्स्क्रिप्शन थे उसको उन्होंने इकठ्ठा किया| फिर उसका वायाफर्केशन किया की कितने टेम्पल है किसके रिगार्डिंग| डिविज़न करने के बाद उन्होंने देखा क्योंकि फर्स्ट बड़ा एरा जो है वह राष्ट्रकूट का रहा है| जो दक्षिण भारत से लेकर महाराष्ट्र तक रहा| उन्होंने देखा की उनका जो फर्स्ट मिलेनियम है वह लगभग ७७० से इसा के हजार तक उनका रुल रहा| १० साल तक उन्होंने उसे डीमेट किया उसे रेडी करने के लिए| उन्होंने पर्सेंतेज निकाला के उस समयमे कितने अलग अलग टेम्पल थे तो ऑलमोस्ट ४० to ५२ सायंस थी जो टेम्पल थे वह ४० से ५२ परसन जैनिज़्म से रिलेटेड थे,उनका निर्माण इस काल में हुआ था|

यह बहुत ही इंपॉर्टेंट फिगर है यह उस समय में वहां की डेमोग्राफी पापुलेशन समझने के लिए यह बहुत इंपॉर्टेंट है इसीलिए जब भी हम बात करते हैं तो हम एरा को रेफर करते हैं कौन सा एरा था तो राष्ट्रकूटो के समय में ऑलमोस्ट ४०% अलग अलग जो टेंपल थे जयंती बहुत जॉइन थे मैंने उस समय में जैन दर्शन लोकप्रिय था| जनमानस के ऊपर जैन दर्शन का बहुत प्रभाव था हमको बहुत अच्छी तरह से जान पड़ता है तो हमें यह भी जानना है कि अलग-अलग समय में जो जो लोगों ने काम किया है तो उसे प्राप्त करके हमें अपने नॉलेज को प्रोग्रेस करना चाहिए| दान्वुलपाडू का अक्छुली मीनिंग होता है दानव का निवास| यह नाम क्यों पड़ा यह तो कहना बहुत मुश्किल है आज वहां का वहां लोगों का सेटलमेंट भी नहीं है मात्र टेंपल है उजड़ी भूमि है यहां पर ओरिजिनल टेंपल कुरु मारी था| यहां पर बने कुछ शिलालेख मिलते हैं सल्लेखना के| अनेक शिलालेख में मिलते हैं सल्लेखना अंत समय में अपने फास्टिंग के द्वारा धीरे-धीरे आहार का त्याग करके अपने देह का त्याग करके यह एक विधि जो दक्षिण भारत में काफी प्रचलन में थी | यहां पर यह बहुत हाई थी जितने लेख है यह समाधि के शिलालेख है | इन दिनों में इन गुरु के द्वारा व्रत लेकर सल्लेखना को किया बहुत सारे इनस्क्रिप्शन यहां परहैं जो इंडिकेट करते हैं कि यह एक प्रिफर्ड साइड थी सल्लेखना की प्रैक्टिस के लिए यह विजिट करते थे क्योंकि यह तो जैन परंपरा के अनेक ग्रंथों में तथा तीर्थ स्थान पर किया हुआ एक धार्मिक विधि है इससे धर्मात्मा को काफी लाभ मिलता है| राष्ट्रकूटके राजा इंद्र तीसरे ने के द्वारा किए गए दानों का भी उल्लेख यहां के शिलालेखों में मिलता है| इंपॉर्टेंट पॉइंट नोट है यहां पर राष्ट्रकूट ओके जो आर्मी चीफ श्री विजय ने 10 वीं शताब्दी में खुद भारतीय होते हुए भी अपने अंतिम समय में जैन दर्शन के सार को सल्लेखना को ग्रहण किया और इसके द्वारा देह का त्याग करके जीवन की पूर्णाहुति की| राजतंत्र के इशू निकल गए पॉलिटिक्स के इशू निकल गए समकालिन प्रजा में धार्मिक प्रकार की विधियां किस प्रकार से होती थी कौनसी-कौनसी प्रैक्टिसेज होती थी यदि एक आर्मी जनरल यह विधि करता है तो आम मानस में यह तिथि कितनी प्रचलन में होगी यह तो डिफिकल्ट विधि मानी जाती है सल्लेखना की| जैन दर्शन के अलग-अलग जो प्रोग्रेस फ्यूचर के स्टेप है उस उसको भी वह काफी हद तक प्रैक्टिस में रखते थे इसका इंटीग्रेशन हमें इस प्रकार से महत्वपूर्ण रूप से मिलता है| यहां पर एक चतुर्मुख प्रतिमा जी है इंद्र तृतीय के द्वारा यह डोनेट की गई थी उस पर उनका

शीला शिलालेख भी है| दूसरी में और जनरल आर्मी जनरल ने जो की विधि पूर्ण की तो उनके युवावस्था की यह एक मूर्ति है तो सल्लेखना में दिखाने के लिए है कि उन्होंने यह विधि पूर्ण करके स्मृति में टेंपल बनाया है| अंतिम समय में सल्लेखना स्वीकार करके यह व्यक्ति को दर्शाता है सिद्ध गति को दर्शाता है जो मुझे जल्दी से जल्दी प्राप्त हो यह दिखाता है उनका जो सार है मोक्ष का वह यह हमें पता है बताता है मोक्षी हमारा टारगेट है ऐसी भावना के साथ वह सल्लेखना को स्वीकार करते हैं| भगवान और गुरु की साक्षी में|

उसके बाद और एक इंपॉर्टेंट तीर्थ आता है गंगा पेरूर जैनिज्म के उत्थान में कर्नाटक के आंध्र प्रदेश का किसी ने योगदान दिया है तो यह है इसे गमके पैरों और गंगे बाड़ी भी कहा जाता है| इसका कनेक्शन है कर्नाटक के बहुत बड़े रूलिंग डायनेस्टी गंग वंश गंगा डायनेस्टी किसको कहते हैं| लेटर और भी डायनेस्टी है जो उसको ईस्टर्न गंगा कहते हैं| अभी जिसका हम डिस्कशन कर रहे हैं वह वेस्टर्न गंगा डायनेस्टी है इसका स्थापना का कनेक्शन है फोर्थ सेंचुरी | यहां पर एक आचार्य बहुत समय से विचरण करते थे आचार्य शिवानंद जी जो यापनीय परंपरा से थे| जो शिलालेखों में किंग मेकर के नाम से जाने जाते हैं| यहाँ पर विचरण करते समय उनका परिचय दो इक्ष्वाकु वंश के दो भाई नौजवान दादीगा और महत्व से हुआ माधवा से हुआ | इक्ष्वाकु एवं माइनर डायनेस्टी पौराणिक इक्ष्वाकु को डायनेस्टी है वह यह नहीं है जो अपने हिस्टोरिकल पीरियड में थी| जिसका वर्णन हमने वर्णन वद्माणुतीर्थ की चर्चा में भी देखा था| जब वह डिसइंटीग्रेट हो जाती है बिखर जाती है तब पार्टिसिपेट सब यहां के वहां हो जाते हैं तब उसी फैमिली को बिलॉन्ग करते जो दो नौजवान थे वह आश्चर्य जी से शिक्षित होकर आचार्य जी से शिक्षित होकर उनके आशीर्वाद और उनके ज्ञान के बल से गंग वंश की स्थापना करते हैं जो 700 साल तक सघन पार्ट ऑफ कर्नाटका मैसूर बेंगलुरु यह डिस्ट्रिक्ट का जो एरिया है उसके प्रिमैसेस यह लोग को रुल किया करते थे| आज यह विलेज एक्क्सिस्ट ही नहीं करता है| यह खंडहर के रूप में भी नहीं है क्योंकि यह पूरा हो गया है यहां से 50 साल साल पहले एक वाटर प्रोजेक्ट हुआ था तो उसमें यह पूरा का पूरा विलेज समा गया तो जो भी रिमेन्स वह उसमें चले गए इतना इंपॉर्टेंट है इवेंट था तो अलग-अलग शिलालेखों में रेकोर्ड हो गये| शिलालेखों से हमको

यह जानकारी मिलती है कि आज हमारी रीकंस्ट्रक्शन का एक प्रयास करते हैं| एक जैन चैत्यालय भी वहां पर विद्यमान था वडमानु बाद यह वन ऑफ द नॉन सेंटर बन जाता है| जैनिज्म का आंध्र प्रदेश में तो यह एक रिकॉर्ड है अपने आप में मायना डायनेस्टी हो यमेजर डायनेस्टी हो तो उसका श्रेय इसे मिलता है| रूल इन एनी पॉलीटिकल टेरिटरी सागर श्री है पूरे दक्षिण में तो वह गंगा डायनेस्टी को है तो यहां पर यह एक देखने जैसा है कि कि जब इनको राजसत्ता भी दिलाई जाती है तब जैन धर्म की शिक्षा देखकर ऐसे कई कहीं मिशन उनको दिए जाते हैं जब तक आप इन बातों को ध्यान में रखेंगे तब तक आप रहेंगे उसमें अनेक अनेक एकता की बातें थी जैसे आप गरीबों का ख्याल रखेंगे आपके राज्य में कुकर्म आदि नहीं होने चाहिए आपको मांस आदि का सेवन वगैरह नहीं करना है ऐसे अनेक प्रकार के व्रतों का उच्चारण उनको कराके यह कहां गया था कि आचार्य शिवानंदी ने जब तक आप इन सभी चीजों का ख्याल रखेंगे आपका राजवंश सदैव रहेगा| जैन आचार्य अंतिम उनकी एक कंडीशन कहते हैं युद्ध करने से परिस्थिति आती हैं आप और आप युद्धभूमि में जाते हो तब आपको कभी कायरों की तरह भाग कर नहीं आना है यह भी एक इंपॉर्टेंट चीज उनको वह समझाते हैं तो देखते हैं कि ज्वाइन डायनेस्टी जो हुआ करती थी जैन गुरु के सानिध्य में मात्र एक विषय नहीं धार्मिक शिक्षण के साथ पॉलिटिकल सोशियोलॉजी एथिक्स पोलिटिकल साइंस साइकोलॉजी इस तरह से सब्जेक्ट उनको पढ़ाए जाते थे क्योंकि जो दर्शन की नैतिकता है वह अलग-अलग विषयों के द्वारा फ्लो होती है तो अलग-अलग विषयों का ज्ञान भी आपको आवश्यक बन जाता है| गंगे वाडी का कनेक्शन आंध्र प्रदेश कर्नाटक में राजसत्ता की स्थापना के लिए नियमित बनता है क्योंकि यहां पर कोई रीमेंस नहीं है तो तो इसके कोई फोटोग्राफ्स भी हमें अवेलेबल नहीं है |

अगला एक इंटरेस्टिंग है गोलटगुड़ी तेलंगाना डिस्टिक में आता है महबूब डिस्टिक में आता है| इसका एक सिस्टम और आर्कियोलॉजिकल समय 8 से 12 सेंचुरी लगाया गया है| यह प्योरलि ब्रिक्स स्ट्रक्चर है दूसरे टेंपल जो है वह स्टोन से बने हैं| यह ब्रिक्स से बना हुआ है यह बनाने की एक टेक्नोलॉजी थी फोर्थ फ्लोर का यह टेंपल |आज यह बंजर भूमि में यह रीमेंस के रूप में विद्यमान है इसमें यह हम पहले का स्ट्रक्चर आज हमें कई स्थान पर शिलालेख मिलते हैं पर रिमेंस नहीं मिलते हैं तो उसका कारण यह है कि ब्रिक्स

टेक्नोलॉजी थी| जब वह खंडहर हो गई तो यहां हो गई लोगों ने अपने घर में प्राचीन रीमेंस को लगाया है| जी स प्रकार से जो जो काम की चीजें थी डिसइंटीग्रेट हो जाती है अगर कोई उसका देखरेख करने वाला नहीं है तो| यहां पर 12 वीं शताब्दी से प्राप्त एक इनस्क्रिप्शन है पाश्वर नाथ भगवान का| इस के मंदिर का अस्तित्व जानने के लिए और मेघचंद्र सिद्धांतों कारण और करना सिद्धांत देव कन्नूर गच्छ यापनीय परंपरा की एक शाखा थी यह गणि की परंपरा बहुत पहले से है स्वयं भगवान महावीर के समय से है तो एक गण का नायक ही गणधर कहा जाता है| इस प्रकार हम देखें और यहां के जो रीमेंस है छोटे-मोटे जो रीमेंस है पिलर मारी म्यूजियम जो महबूब डिस्ट्रिक्ट में है वहां पर रखे हुए हैं | यहां पर तीर्थंकर के एक बड़े चरण मिले हैं संशोधन करने पर पता चलता है कि यह बेसिकली एक आइडल के चरण है नासिरफ फुटप्रिंट परी एक आइडल के ही फुटप्रिंट है इसका साइज देखेंगे और मंदिर का साइज देखकर तो यह पता चलेगा कि कितनी बड़ी यहां जीन प्रतिमा मंदिर के गर्भगृह में विराजमान रही होगी|

अगला एक विशिष्ट तीर्थ है पाटन चेरु| कोटल केरल के नाम से भी जाना जाता है हैदराबाद से 25 किलोमीटर की दूरी पर यहां पर आज लोगों में वह जन श्रुति है लोगों में वह यहां पर 500 से अधिक जिनालय विद्यमान थे| वेस्टर्न चालुक्यास में यह बहुत ही इंपॉर्टेंट अर्बन सेंटर था तो उसकी बाउंड्री कहां तक थी उसका पता लगाना भी हमको काफी मुश्किल पड़ जाता है उसके लिए बहुत रिसर्च चाहिए इसका संबंध वेस्टर्न चालूकिया और कल्याण से था अतिमबे मुखिया की श्राविका थी जो इसलिए यहां से बिलॉन्ग करती थी| वह एक बड़ा नाम है साहित्य जगत में| इसको कह सकते हैं कि प्रॉमिनेंट जैन फीकर के जिन लोगों का नाम आता है उसमें इनका भी नाम आता है जिन्होंने अजीतनाथ प्रभु का चरित्र कन्नड़ में लिखवाया था एक आज रना कवि के द्वारा| उसकी प्रति पूरे दक्षिण भारत में उन्होंने वितरण करवाई थी| इनका और एक यह था कि अपने समय में उन्होंने बड़े स्तर पर डोनेशन किया था| जीन पॉपुलेशन के लिए उन्होंने बहुत परिश्रम किया था वे किसी का विवाह होता था उनको कितने शांतिनाथ प्रभु की प्रतिमा भेंट स्वरूप दिया करती थी| यह सब बातें हमें पता चलती है अपने जमाने की बुक ब्रह्मा शिवा नाम की एक पोएट थे अपने जमाने के| इन्होंने समय परीक्षा नामक अद्भुत ग्रंथ लिखा हुआ है जो जो समकालीन

जैन परिस्थिति को समझाता है| यह भी यहीं से बिलॉन्ग करते थे इन्होंने जो भी साइंस कन्वर्ट हुए उसका सब पॉलिटिक्स एनालिसिस किया है समय परीक्षा ग्रंथ है कन्नड़ का उसमें किया हुआ है| यहां के जो है वह थोड़े बहुत चेन्नई में है और थोड़े बहुत हैदराबाद की म्यूजियम में है|

इसके बाद दो और प्रमुख तीर्थ है हनामकोंडा अगर पांच प्रमुख तीर्थ में गीनना है तो हनम कुंडा है| इसका कनेक्शन काकटिया डायनेस्टी से है जो आंध्र प्रदेश के तेलंगाना जैन फेमेली से है यह भी एक इंपॉर्टेंट डायनेस्टी रही है इसका ओरिजिनल फैमिली से रहा है इनका उल्लेख हमें विविध तीर्थ कल्प में भी मिलता है| आचार्य जी जिन प्रभसूरी जी ने एक स्वतंत्र चैप्टर दिया हुआ है इस तीर्थ के बारे में और यहां पर अनेक जीनालियों के अस्तित्व की चर्चा भी उन्होंने की है| काकतीय वंश का संबंध है तो वह किस तरह से जुड़ा हुआ है इसकी भी बात उन्होंने वितरित करने की है यहां पर नयचंद्र नाम के आचार्य रहते हैं| हन्मकोंडा और वारंगल आज का यह दोनों जेनसिटी थे| वारंगल का नाम एकशीलानगर था दोनों में चार-पांच किलोमीटर का ही डिफरेंस है एक शीला नगर में एक मॉनेस्ट्री थी| वहा माधवन नामके युवक पढाई करते थे| आचार्य महाराज विहार में रहते हैं और वह अपना एक ग्रंथ भूल जाते हैं तो यह उनको कहते हैं कि माधवन आप जाकर लेकर आइए जाते हैं तब उनको शासन देवी के दर्शन होते हैं| उनको योग्य वर के लिए इच्छा करते हैं फिर भी वह व्यक्ति कुछ नहीं मांगता है फिर भी बहुत आग्रह करने में बाद में फिर भी उन्हें स्वयं राज्य की प्राप्ति होगी ऐसा वरदान देती है और और अनेक सारी अनुकूलता हो उसके लिए उसके लिए प्रार्थना करती है तो देखिए के जैन आचार्य की निश्रा में कैसे-कैसे तेजस्वी युवक उस समय में हुए थे| इसका प्रोबेबली पीरियड तो हमें पता नहीं है यह बे देसीकली टेन्थ सेंचुरी के आस पास होगा क्योंकि नेम चंद्र नाम के तीन आचार्य का पता हमें इस प्रदेश में मिलता है तो उसमें यह वन ऑफ़ होने चाहिए| एक और नेम चंद्र जी का नाम कुलपकजी से संबंधित है वह हमकोडा अपने के रूप में आता है अपने कैपिटल के रूप में बनाता है| आचार्य जीन प्रभ सूरी जी ने जिस तरह से राजाओं की डायनेस्टी दी है रूद्र महादेव गणपति आदि यहां से प्राप्त अलग-अलग करते हैं इनस्क्रिप्शन से मैच करते हैं मतलब ग्रंथ के लेखन में हिस्टोरिकल सेन्स को कितना ध्यान में रखते थे वह समय

के आचार्य यह भी हमें गौर करने के लिए मिलता है| काकतीय का नाम कैसे पड़ा उसके बारे में देखे तो काकतीय एक कोई विलेज था वहां के माधवन वहां के निवासी थे तो ऐसा शब्द में आया होगा यह राष्ट्रकूटओके समय में भी विद्यमान था| उसके पहले भी यह सेंटर था यहां पर यह भी है जो राजा गलाया गुप्ता के समय में निर्मित हुआ था एक स्ट्रक्चर था हनामकोंडा में बहुत सारे छोटे छोटे हिल उसमें से दो मुख्य है एक पद्माक्षी के नाम से जाना जाता है और एक कदालय बसली नाम से जाना जाता है| जिसमें अनेक सारे कल्चर है| यहां का मंदिर पद्माक्षी टेंपल के नाम से जाना जाता है यहां पर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा भी है यह कड़ालाया बसारी के नाम से जाना जाता है यह दिन प्रतिमा के साथ शक्ति भी है और देवी लक्ष्मी देवी को भी यहां पूछते हैं और बहुत दूर दूर से लोग आते हैं यह पद्मावती से पद्माक्षी बन गया यहां पर जनों का कोई भी कंट्रोल नहीं है| यह सब पेंट किया गया है| अगलिय गुत्था एक फिजीशियन थे| यापनीय परंपरा से उनका संबंध था| यहां पर एक 35 फीट ऊंची रिलीफ कल्चर है शांतिनाथ का कल्चर है। हमारे पास जो ज्ञान है उसको हम बाहर नहीं निकलते हैं पब्लिक के पास देते नहीं है तो उसका जो आउटपुट होना चाहिए वह हमारे पास नहीं आता है। हमें भी ऑन द बाउंड्री सब सीखना चाहिए। इंसेंट बुक्शेल्फ पर्वत में बनाए जाते थे अस्तित्व को प्राचीन समय में बनाने के लिए उसका यहां पर एग्जांपल दिया गया है इसलिए हमें पता चलता है कि प्रॉब्लम कि यह जमाने में सेंटर ऑफ लर्निंग रहा होगा|

कॉलपाक माणिक्य स्वामी मंदिर इस तीर्थ को आज हम कुलपाक कहते हैं जहां के मानिक्य स्वामी पूरे भारत में प्रसिद्ध है| आज यह प्रसिद्ध है ऐसा नहीं किंतु बहुत सामय से यह प्रसिद्ध है| एक ऐतिहासिक तीर्थ रहा है वह अपने जमाने में इसके बारे में अगर जानना है तो उसके लिए भी एक ही सोर्स है हमारे पास विविध कल्प ग्रंथ यह माणिक्य स्वामी कौन है तो यह हमारे ऋषभदेव भगवान हैं कर्नाटक आंध्र प्रदेश में भगवान ऋषभदेव के अनेक नाम प्रचलन में थे आज यह एक ही मंदिर नहीं है कि जहां पर उनको उनके स्वामी कहा जाता है किंतु कर्नाटक के बहुत सारे मंदिर है जहां पर उनको इस नाम से संबोधित किया जाता है यहां तक कि शिलालेखों में भी भगवान का नाम माणिक्य स्वामी से एड्रेस किया गया है| नवरत्न में सबसे अधिक माणिक है| 400बीसी से आज तक 16 00साल से

यह नाम प्रचलन में है विकल्प में विविध कल्पसूत्र में 1 जनश्रुति के आधार पर उन्होंने कहा है| रामायण युग से इसका संबंध रहा है| यह रावण के पास जब लंका का विनाश हुआ तब रानी मंदोदरी ने समुद्र में भगवान को पधरा दिया ऐसा माना जाता है कि यह प्योर माणिक से बनी हुई थी| बहुत समय तक वह खारे पानी में रहने के कारण यह ब्लैक हो गई और आज रूप में विद्यमान है आचार्य श्री का ऐसा उन्होंने कहा है कि एक जमाने में पानिमे दिए जलाए जाते थे ऐसी अनेक बातों का उल्लेख किया है| उन्होंने यह भी बताया था कि शंकर नाम का एक राजा था उन्हें यह मूर्ति मिली और उन्होंने कुलपार्क में पुनः स्थापना की ओरिजिनल श्रीलंका का था| आरकोलॉजिकल दृष्टि से हम देखे तो यह एक राजा के पास बहुत बड़ा साम्राज्य हो तो वह डिवाइड करते हैं तो गोकुलम पार्क राष्ट्रकूट ओके समय में एक अर्बन सेंटर था उसके डिवीजन के वह हेड थे और उसके अंदर मोर धेन ९०० राज्य थे उसके प्रमुख थे | राष्ट्रकूट ओके वह आर्मी चीफ इस तरह के प्रशासक हुआ करते थे वह उन्हें एक साथ रहता था तो यह बेसीकली राष्ट्रकूटा में एक सामंत थे |उसके साथ हम यह कह सकते हैं कि शंकर राजा थे आचार्य श्री कहते हैं कि तीनों समय यहां मानिक के स्वामी की पूजा होती थी| शंकर राजा ने इस देश को छोड़कर अन्य जगह पर जिनालयो का निर्माण किया था| कर्नाटक में एक जगह है पप्पट यह बहुत ही अच्छा था चंद्रप्रभु था वहां पर यह मिलता है इसका विवरण मिलता है| इंद्रपाल गुत्ठा नाम का एक पर्वत है इसीलिए यहां पर भी उन्होंने जिनालय बनाए थे| यहां पर जैन धर्म की अनेक परंपराओं का विवरण मिलता है दिगंबर श्वेतांबर यापनी आदि यहां पर अंबिका देवी का भी एक स्वतंत्र मंदिर था यहां पर एक मानस्तंभ भी मिला है यहां पर बहुत सारे जैन मंदिर हमें मिलते हैं| सोमेश्वर टेंपल यह एक पिक्चर है यह बेसीकली मंदिर भी है और भी उसको कन्वर्ट किया गया है| के रूप में भी उसको कन्वर्ट किया गया है यहां पर खड़े हैं उन सभी पर जीनबिम्ब बनाए गए हैं इससे पता चलता है क्या रीइनोवेशन अलग-अलग परंपरा ने किया गया है खास करके तपा गछ के अनेक आचार्यों ने रिनोवेशन का काम करवाया है| वेमुल वाडा भी बहुत इम्पोर्टेड तीर्थ है जिसकी बात हमने की है| इस प्रकार से आंध्र और कर्नाटक के तीर्थ हमे मिलते है|

****

JAIN SAHITYA ACADEMY TRUST